चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	13.07.2021	--	--

कपास की फसल में मानव कठिन परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर वेबिनार आयोजित

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	12.07.2021	--	--

मानव कठिन परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग के योगदान विषय पर वेबिनार आयोजित

[illegible]

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	13.07.2021	--	--

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

कपास की फसल में मानव कठिन परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर वेबिनार आयोजित

हिसार : कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कुलपति ने हरियाणा प्रदेश में कपास की खेती की मौजूदा स्थिति तथा इस क्षेत्र में मशीनीकरण को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने शोधकर्ताओं से आह्वान करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में बहुउद्देशीय मशीनों का निर्माण करें जिनमें आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल हो जिससे किसानों को लाभ मिलेगा। भारतीय कृषि स्थितियों को ध्यान में रखते हुए ड्रोन की मदद से स्व-चालित उच्च निकासी स्प्रेयर, एयर असिस्टेड स्प्रेयर, इलेक्ट्रोस्टैटिक स्प्रेयर और एरियल स्प्रेइंग जैसी पौध संरक्षण तकनीकों के विकास पर जोर दिया।

कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	12.07.2021	--	--

कपास की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता : कुलपति

हिसार/12 जुलाई/रिपोर्टर

कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए अविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वैबीनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कुलपति ने प्रदेश में कपास की खेती की मौजूदा स्थिति तथा इस क्षेत्र में मशीनीकरण को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि फसल के अच्छे उत्पादन हेतु समय पर भूमि की तैयारी के साथ-साथ समय पर बुआई, निराई-गुड़ाई तथा कीट प्रबंधन बहुत जरूरी है जिस कार्य हेतु कई उन्नत बुआई मशीन, स्वचालित वीडर, हाई क्लियरेंस कल्टीवेटर, आधुनिक स्प्रेयर आदि उपलब्ध है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में बहुउद्देशीय मशीनों का निर्माण करें जिनमें आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल हो जिससे किसानों को लाभ मिलेगा। कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जोकि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हैक्टेयर से 13.20 मिलियन हैक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। लेकिन उपज जो वर्तमान में 501 किग्रा/हैक्टेयर है, विश्व की औसत उपज लगभग 769 किग्रा/हैक्टेयर की तुलना में अभी भी कम है। हरियाणा में, कपास लगभग 6.69 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसमें औसत उत्पादन 571 किलोग्राम/हैक्टेयर होता है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुगाई हेतु उपलब्ध मशीनों का उपयोग हमारे देश में बढ़ाने हेतु कपास की बौनी तथा अर्ध बौनी किस्म विकसित करने की आवश्यकता है जिससे कि इन मशीनों के परिचालन में कोई दिक्कत न आए। वैबीनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण हेतु हो रहे अनुसंधान कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में वर्तमान में उपलब्ध मशीनें तथा भविष्य में उपयोगी साबित होने वाली मशीनों के बारे में जानकारी दी। एचएयू से डॉ. विजया रानी, इंजीनियर भारत पटेल, इंजीनियर अनुज उपाध्याय तथा डॉ. प्रदीप राजन ने भी कपास की तकनीकों और उनके उपयोग पर विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	12.07.2021	--	--

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज

कपास की फसल में मानव कठिन परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर वेबिनार आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग	13.07.2021	--	--

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

कपास की फसल में मानव कठिन परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर वेबिनार आयोजित

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

वेबिनार के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व अन्य।

हिसार। कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है।

मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत करवाया। कुलपति ने हरियाणा प्रदेश में कपास की खेती की मौजूदा स्थिति तथा इस क्षेत्र में मशीनीकरण को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा की फसल के अच्छे उत्पादन हेतु समय पर भूमि की तैयारी के साथ-साथ समय पर बुआई, निराई-गुड़ाई तथा कीट प्रबंधन बहुत जरूरी है जिस कार्य हेतु कई उन्नत बुआई मशीन, स्वचालित वीडर, हाई क्लियरेंस कल्टीवेटर, आधुनिक स्प्रेयर आदि उपलब्ध है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में बहुउद्देशीय मशीनों का निर्माण करें जिनमें आधुनिक तकनीकी का इस्तेमाल हो जिससे किसानों को लाभ मिलेगा। भारतीय कृषि स्थितियों को ध्यान में रखते हुए ड्रोन की मदद से स्व-चालित उच्च निकासी स्प्रेयर, एयर असिस्टेड स्प्रेयर, इलेक्ट्रोस्टैटिक स्प्रेयर और एरियल स्प्रेइंग जैसी पौध संरक्षण तकनीकों के विकास पर जोर दिया।

बिजाई का क्षेत्र विश्व में 37 प्रतिशत, लेकिन उपज कम

कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। लेकिन उपज जो वर्तमान में 501 किग्रा/हेक्टेयर है, विश्व की औसत उपज लगभग 783 किग्रा/हेक्टेयर की तुलना में अभी भी कम है। हरियाणा में, कपास लगभग 6.69 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसकी औसत उत्पादन 571 किलोग्राम / हेक्टेयर होता है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुगाई हेतु उपलब्ध मशीनों का उपयोग हमारे देश में बढ़ाने हेतु कपास की बौनी तथा अर्ध बौनी किस्म विकसित करने की आवश्यकता है जिससे की इन मशीनों के परिचालन में कोई दिक्कत न आए। इस वेबिनार के मुख्य वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण हेतु हो रहे अनुसंधान कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में वर्तमान में उपलब्ध मशीनों तथा भविष्य में उपयोगी साबित होने वाली मशीनों के बारे में जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

. लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि· भूमि	13·7·21	9	2-5

खेती | कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति ने आह्वान किया

कपास की खेती पर वेबिनार, मशीनों का ज्यादा प्रयोग करने से ही उत्पादन बढ़ेगा

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है। देश में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहे।

वे कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग के कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने के लिए अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

हिसार। वेबिनार के दौरान संबोधित करते हकृवि कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज व अन्य। फोटो : हरिभूमि

- कपास की फसल में मानव श्रम कम करने के लिए वेबिनार में किया मंथन
- पंजाब कृषि विवि के विशेषज्ञों ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया

बिजाई का क्षेत्र विश्व में 37 प्रतिशत, लेकिन उपज कम: कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जोकि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। लेकिन उपज जो वर्तमान में 501 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है, विश्व की औसत उपज लगभग 789 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की तुलना में अभी भी कम है। हरियाणा में, कपास लगभग 6.69 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है।

कपास की बौनी किस्म विकसित करने की जरूरत: अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुगाई के लिए उपलब्ध मशीनों का प्रचलन हमारे देश में बढ़ाने के लिए कपास की बौनी तथा अर्ध-बौनी किस्म विकसित करने की आवश्यकता है जिससे की इस मशीनों के परिचालन में कोई दिक्कत नहीं आए। वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने वर्तमान में उपलब्ध मशीनें तथा भविष्य में उपयोगी होने वाली मशीनों बारे जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	13.7.21	3	6.8

कपास में मशीनीकरण का उपयोग कम करेगा लागत

इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किया वेबिनार

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज मीटिंग में हिस्सा लेते हुए।

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है।

मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार में मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसल के अच्छे उत्पादन के लिए समय पर भूमि की तैयारी के साथ-साथ समय पर बुआई, निराई-गुड़ाई और कीट प्रबंधन बहुत जरूरी है। उन्होंने शोधकर्ताओं से आह्वान किया कि इस क्षेत्र में बहुउद्देशीय मशीनों का निर्माण करें, जिनमें आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल हो जिससे किसानों को लाभ मिलेगा। कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। भारत में वर्तमान में 501 किग्रा/हेक्टेयर उपज है। विश्व की औसत उपज लगभग 789 किग्रा/हेक्टेयर है। हरियाणा में 6.69 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कपास उगाया जाता है। जिसमें औसत उत्पादन 571 किलोग्राम/ हेक्टेयर होता है।

महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुगाई हेतु उपलब्ध मशीनों का प्रचलन हमारे देश में बढ़ाने हेतु कपास की बौनी और अर्ध.बौनी किस्म विकसित करने की जरूरत है। प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण हेतु हो रहे अनुसंधान कार्य के बारे में जानकारी दी। एचएयू से डॉ. विजया रानी, इंजीनियर भारत पटेल, इंजीनियर अनूप उपाध्याय और डॉ. प्रदीप राजन ने भी कपास की तकनीकों और उनके उपयोग पर विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	13.7.21	4	3-6

वेबिनार कपास की फसल में मानव के परिश्रम को कम करने के लिए इंजीनियरिंग हस्तक्षेप विषय पर हुई चर्चा

कपास में मशीनीकरण करेगा लागत को कम

जागरण संवाददाता, हिसार : कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने के लिए अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. अमरजीत कालड़ा ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 फीसद है। लेकिन उपज वर्तमान में 501 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर है।

वेबिनार के दौरान संबोधित करते चौधरी चरण सिंह हरियाणा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज व अन्य । ● विज्ञप्ति

मशीनों के बारे में बताया

वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डा. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण के लिए हो रहे अनुसंधान कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में वर्तमान में उपलब्ध मशीनें तथा भविष्य में उपयोगी मशीनों के बारे में जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	13.7.21	5	6.8

कपास में मशीनीकरण का उपयोग करेगा लागत को कम : प्रो. काम्बोज

वैबिनार में सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

हिसार, 12 जुलाई (देवानंद): कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने हेतु मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठात डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

बिजाई का क्षेत्र विश्व में 37 प्रतिशत, लेकिन उपज कम : कुलपति ने कहा कि भारत को कपास की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है जो कि कपास की खेती के तहत 10.5 मिलियन हेक्टेयर से 12.20 मिलियन हेक्टेयर के बीच विश्व क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत है। लेकिन उपज जो वर्तमान में 501 किग्रा/हेक्टेयर है, विश्व की औसत उपज लगभग 789 किग्रा/हेक्टेयर की तुलना में अभी भी कम है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि हमें कपास की चुगाई हेतु उपलब्ध मशीनों का प्रचलन हमारे देश में बढ़ाने हेतु कपास की बौनी तथा अर्ध.बौनी किस्म विकसित करने की आवश्यकता है जिससे की इस मशीनों के परिचालन में कोई दिक्कत न आए। इस वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह ने कपास की खेती में मशीनीकरण हेतु हो रहे अनुसंधान कार्य के साथ-साथ इस क्षेत्र में वर्तमान में उपलब्ध मशीनें तथा भविष्य में उपयोगी साबित होने वाली मशीनों के बारे में जानकारी दी। एचएयू से डॉ. विजया रानी, इंजीनियर भारत पटेल, इंजीनियर अनूप उपाध्याय तथा डॉ. प्रदीप राजन ने भी कपास की तकनीकों और उनके उपयोग पर विचार रखे। इस वेबिनार में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, सहित विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक, हरियाणा सरकार में कार्यरत कृषि अभियन्ता आदि मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13.7.21	2	4

वीसी ने कहा-कपास में मशीनीकरण का उपयोग लागत को कम करेगा

हिसार | कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और यह देश के सामाजिक और आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कपास की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है, इसलिए इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता है। मानव श्रम को कम करने के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने के लिए मशीनीकरण एक अत्यंत उपयोगी विकल्प है, जो इसकी लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये विचार एचएयू के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने व्यक्त किए।

वे विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कपास की खेती में मानव श्रम को कम करने हेतु अभियांत्रिकी क्षेत्र में किए गए आविष्कार विषय पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमरजीत कालड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने संबोधित किया। इस वेबिनार के प्रमुख वक्ता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना से डॉ. मंजीत सिंह थे।